

सन् 1895 भारत में प्रारंभिक सिनेमा

Chhaya

Reference:- 1 सन् 1895 में लुमियर ब्रदर्स में पेरिस सैलून सभा भवन में इंजन ट्रेन की पहली फिल्म प्रदर्शित की थी इन्हीं लुमियर ब्रदर्स ने 7 जुलाई 896 को मुंबई के वाटसन होटल में फिल्म का पहला शो भी दिखाया था ₹1 प्रति व्यक्ति प्रवेश शुल्क देकर मुंबई के संभ्रांत वर्ग ने बाबा और करतल ध्वनि के साथ किस का स्वागत किया उसी दिन भारतीय सिनेमा का जन्म हुआ था जनसमूह के जोशीले प्रतिक्रिया उसे प्रोत्साहित होकर नावेल्टी थिएटर में इसे फिर प्रदर्शित किया गया और निम्न वर्ग तथा अभिजात्य दोनों वर्गों को लुभाने के लिए टिकट की गईं दरें रखी गईं रूढ़ीवादी महिलाओं के लिए जनाना जो भी चला गया सबसे सस्ती सीट चढ़ाने की थी और एक शताब्दी बाद भी यही चवन्नी वाले ही सिनेमा, इन के सितारों, संगीत निर्देशकों और दर्शन भारत के संपूर्ण व्यावसायिक सिनेमा के भाग्य विधाता है !

2 सन् 1902 - 1902 के आसपास अब्दुल्ली इसोफल्ली और जे०एस० मादन जैसी उद्यमी छोटे, खुले मैदानों में घूम-घूम कर तंबुओं में बाइस्कोप का प्रदर्शन करते थे इन्होंने बर्मा (म्यांमार) से लेकर सिलोन (श्रीलंका) तथा सिनेमा के वितरण का साम्राज्य खड़ा किया प्रारंभिक सिनेमा (पियानो) अथवा (हारमोनियम) वादक पर निर्भर होता था जिनकी आवाज (प्रोजेक्टर) की घड़घड़ाहट में खो जाती थी लेकिन आयातित फिल्मों और डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के नए पन का आकर्षण बहुत जल्दी ही दम तोड़ने लगा फिर फिल्म प्रदर्शकों को अपनी प्रस्तुतियों को आकर्षक बनाने के लिए नृत्यांगनाओं, करतबबाजों और पहलवानों को मंच पर उतारना पड़ा शुरुआती दिनों में विवेकशील भारतीय दर्शक विदेशी फिल्मों से स्वयं को जुड़ा हुआ नहीं पाते थे!

3:-सन् 1901- 1901 में एच०एस० भटवाडेकर (सारे दादा के नाम से विख्यात) ने पहली बार भारतीय विषय वस्तु और न्यूज़ रीलों की शूटिंग के इसके तुरंत बाद तमाम यूरोपीय और अमेरिकी कंपनियों ने भारतीय दर्शकों के लिए भारत में शूट की गई भारतीय न्यूज़ रीलों का लाभ लिया फरवरी, 1960 में कोलकाता के क्लासिक थिएटर में मंचित 'अलीबाबा', 'बुद्ध', 'सीताराम' नामक नाटकों की पहली बार फोटोग्राफी हीरालाल सेन ने की यद्यपि भारतीय बाजार यूरोपीय और अमेरिकी फिल्मों से पटा हुआ था लेकिन बहुत कम दर्शक इन फिल्मों को देखने थे क्योंकि आम दर्शक इन से अपने को अलग थलग पाते थे!

4:-सन् 1912- मई 1912 में आयातित कैमरा, फिल्म स्टॉक और यंत्रों का प्रयोग करके हिंदू संत 'पुण्डलिक' पर आधारित एक नाटक का फिल्मांकन आर० जी० टोरनी ने किया जो शायद भारत की पहली फुल लेंथ फिल्म है!

5:-सन् 1913- 1913 में दादा साहेब फाल्के द्वारा बनाई गई राजा हरिश्चंद्र फिल्म काफी जल्दी भारत में लोकप्रिय हो गई और वर्ष 1930 तक लगभग 200 फिल्में प्रतिवर्ष बन रही थी पहली पहली फिल्म थी अरदेशिर ईरानी द्वारा बनाई गई आलम आरा! यह फिल्म काफी ज्यादा लोकप्रिय रही जल्द ही सारी फिल्में, बोलती फिल्म थी!

समाजवादी चिंतक डॉ राम मनोहर लोहिया ने फिल्मों के बारे में टिप्पणी की थी कि-"भारत को एक करने वाली दो ही शक्तियां हैं, एक गांधी, दूसरी फिल्में लेकिन कितनी विचित्र बात है कि फिल्मों पर गांधीजी का वैसा वरदहस्त कभी नहीं रहा, जैसे साहित्य एवं पत्रकारिता पर था गांधी जी ने अपनी जिंदगी में शायद एक ही सवाक फिल्म देखी थी 'रामराज्य' (1943), वह भी गीतकार रमेश गुप्ता द्वारा उसके गीत सुनने के बाद, जबकि आज की पीढ़ी के लोग, जिन्होंने गांधी जी को आज तक देखा नहीं वह यदि चलते-फिरते बोलते गांधीजी की एक झलक पाते हैं तो वह भी अभिलेखागार में मौजूद या बी०बी०सी० अथवा अन्य एजेंसियों द्वारा समय-समय पर बनाए गए वृत्तचित्रों के माध्यम से या फिर रिचर्ड एटनबरा की फिल्म 'गांधी से'!

वस्तुतः फिल्में देखना है या ना देखना उस समय संपूर्ण मध्यमवर्गीय भारतीय जनमानस का द्वंद था मध्यमवर्गीय परिवारों में यदि कोई युवा अच्छी पुस्तकें पढ़ता था तो जहां उसे एक और प्रोत्साहन मिलता था वही अच्छी फिल्में देखने पर फटकार की भी आशंका बनी रहती थी!

"भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय आंदोलन में कोई भूमिका थी या नहीं दरअसल यह जांचने का काम भी अभी गंभीरता से नहीं हुआ है तब तक जो तथ्य सामने आए हैं उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्रीय सिनेमा की धारा कमजोर भले ही रही हो लेकिन महत्वहीन नहीं थी!"

वैसे इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत में अंग्रेजी राज के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन ने समाज में जो लहरें पैदा के 1930 के आसपास उनमें से एक लहर राष्ट्रीय सिनेमा की भी थी जिसका संघर्ष भारतीय सिनेमा के औपनिवेशिक शोषण से था पर इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रीय आंदोलन नेचर सांस्कृतिक लहरों को जन्म दिया था उनमें से यह सबसे कमजोर लहर थी!

भारतीय सिनेमा की राष्ट्रीय आंदोलन में कोई भूमिका थी या नहीं दर असल यह जांचने का काम भी अभी गंभीरता से नहीं हुआ है अब तक जो तथ्य सामने आए हैं, उससे यही निष्कर्ष निकलता है की राष्ट्रीय सिनेमा की धारा कमजोर भले ही रही हो लेकिन महत्वहीन नहीं थी एक तरफ जहां हमारा राष्ट्रीय नेता सिनेमा की शक्ति से प्रायः अनभिज्ञ था और उसे उपेक्षित दृष्टि से देख रहा था वहीं दूसरी तरफ प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुए अपने अनुभवों से अंग्रेज संप्रभुओं ने सिनेमा की ताकत को अच्छी तरह से पहचान लिया था अंग्रेजों ने जहां प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जहां सिनेमा का इस्तेमाल अपने पक्ष में 'प्रोपेगंडा' के रूप में किया था वही रूसी क्रांति के फलस्वरूप 1917 में रूस द्वारा साम्राज्यवादी युद्ध से अलग हो जाने पर सिनेमा को उन्होंने 'वोल्शेबिज़्म' के खिलाफ प्रचार के लिए भी इस्तेमाल करने का प्रयास किया शायद सिनेमा की ताकत के एहसास में ही युद्ध के अंतिम चरण में यानी 1918 में अंग्रेजों को 'इंडियन सिनेमाटोग्राफ एक्ट' पारित करने के लिए बाध्य किया!

इसके तहत सार्वजनिक प्रदर्शन से पूर्व हर फिल्म को सेंसर बोर्ड से प्रमाण-पत्र लेना आवश्यक है यह सेंसर परोक्ष रूप से पूरी तरह राजनीतिक था और इसके तहत किसी की भी राजनीतिक आंदोलन, व्यक्ति या घटना का चित्रण अथवा व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाने वाले कथानकों पर बने सिनेमा की नियति थी, उसका प्रतिबंधित होना अर्थात् जब भारत में स्वतंत्रता की लड़ाई जन आंदोलन की शक्ल अख्तियार कर रही थी सिनेमा पर सेंसर की पाबंदियां लगा दी गई 1916 में एक पर फिल्म बनाने के लिए गवर्नमेंट ट्रेजरी से 3,000 पौंड की धनराशि व्यय करने की संस्तुति दी गई थी

अतः जाहिर है कि उस व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सत्ता से बेर लेना काफी महंगा था आश्चर्य नहीं कि ऐसे में राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी फिल्में कम ही बनी इसके बावजूद ऐसी ढेरों फिल्में बनी जिन्होंने राष्ट्रीय जीवन भावना एवं द्वंद को अभिव्यक्ति दी!

मुक्त सिनेमा के दौर में ही भ्रष्ट औपनिवेशिक संस्कृति के प्रभाव के खिलाफ सामाजिक चेतना से लैस फिल्मों की परंपरा शुरू हो गई थी पाटणकर बंधुओं द्वारा निर्मित फिल्में शिक्षा तथा वासना एवं (कबीर-कमाल) 1919 उल्लेखनीय है जिन्होंने सामाजिक चेतना की अलख जगाने के प्रयासों से सिनेमा को भी जोड़ा !

भारत में अंग्रेजों ने जिस ने आर्थिक आचार विचार को जन्म दिया था जमींदार एवं साहूकार उसके अभिन्न अंग थे! इन जमींदारों एवं साहूकारों के शोषण को पहली बार **1925** में बाबूराव पेंटर ने अभिव्यक्ति दी सावकारी पाश बना कर! वी० शांताराम ने इस फिल्म से ही अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी इस फिल्म में उन्होंने विद्रोही किसान युवक की भूमिका निभाई थी !

1913 में आलम आरा के प्रदर्शन के साथ ही भारत में सवाक फिल्मों की शुरुआत हुई है वह समय था जब राष्ट्रीय आंदोलन गोल में सम्मेलन के उबाऊ दौर से गुजर रहा था और जनता बेचैन राष्ट्रीय नेताओं को निहार रही थी इस समय भारतीय सिनेमा ने जनता की भावनाओं को पर्याप्त अभिव्यक्ति दी !

' **आलम आरा** ' के प्रदर्शन से पूर्व बनी दो सवाक लघु फिल्मों ने गांधीजी और कस्तूरबा को मांडवी की एक खादी प्रदर्शनी में भाषण करते दिखाया था सन 1930 में भी रेड फिल्म का एकमात्र गांधी जी की आकृति के समान था जिसे अब पछता सामाजिक समानता और संप्रदायिक सौहार्द के पक्ष में कार्य करते दिखाया गया था लेकिन इसके प्रदर्शन की अनुमति नहीं दी गई !

भारत की दूसरी समाज फिल्म का गौरव प्राप्त कारण 1936 1936 ब्रिटिश संसद का शिकार हो गई फिल्म का नाम उसके कथानक का संकेत देता है , उसी दौरान कांग्रेस के कार्यकलापों पर बनी फिल्म कांग्रेस दल जिसे नेशनल थियेटर मद्रास ने बनाया था भी जब्त हुई ! इतना जबरदस्त हुआ कि कंपनी बंद हो गई !

हिंदी सिनेमा जिसे बॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है! हिंदी भाषा में फिल्म बनाने का उद्योग है ! बॉलीवुड नाम अंग्रेजी सिनेमा उद्योग हॉलीवुड की तर्ज पर रखा गया है ! हिंदी फिल्म मुख्यता उद्योग मुंबई शहर में बसा है! ये फिल्म हिंदुस्तान-पाकिस्तान और दुनिया के कई देशों के लोगों के दिलों की धड़कन है हर फिल्म में कई संगीत में गाने होते हैं इन फिल्मों हिंदी की हिंदुस्तानी शैली का चलन है ! हिंदी और उर्दू खड़ी बोली के साथ-साथ अवधि बंबइया हिंदी भोजपुरी राजस्थानी जैसी बोलियां भी संवाद और गानों में उपयुक्त होते हैं ! प्यार ,देशभक्ति ,परिवार, अपराध ,भय इत्यादि मुख्य विषय होते हैं ज्यादातर गाने उर्दू शायरी

पर आधारित होते हैं ! भारत में सबसे बड़ी फिल्म निर्माताओं में से एक शुद्ध बॉक्स ऑफिस राजस्व का 43% का प्रतिनिधित्व करता है ! क्षेत्रीय सिनेमा के बाकी 2014 के रूप में 21% का गठन है !

बॉलीवुड की दुनिया में फिल्म निर्माण के सबसे बड़े केंद्रों में से एक है ! बॉलीवुड कार्यकर्ताओं लोगों की संख्या और निर्मित फिल्मों की संख्या के मामले में दुनिया में सबसे बड़ी फिल्म उद्योग आवश्यक हैं !

Matusiz, जे और पियानो पी० के अनुसार वर्ष 2011 में 3.5 अरब से अधिक टिकट ग्लोब जो तुलना में हॉलीवुड 900,000 से अधिक टिकट है भारत में बेच दिया होता है बॉलीवुड 1969 में भारतीय सिनेमा में निर्मित फिल्मों की कुल के बाहर 2014 में 252 फिल्मों का निर्माण किया गया !

आने वाले वर्षों में भारत में स्वतंत्रता संग्राम देश विभाजन जैसी ऐतिहासिक घटना हुई अंदर मालवणी हिंदी फिल्मों में इतना प्रभाव छाया रहा 1950 के दशक में हिंदी फिल्में श्वेत श्याम से रंगीन हो गई फिल्म का विषय मुख्यता प्रेम होता था और संगीत फिल्मों का मुख्य अंग होता था !

1960-70 के दशक की फिल्मों में हिंसा का प्रभाव रहा 1980 और 1990 के दशक की फिल्मों में हिंसा का प्रभाव रहा 1990 के दशक से प्रेम आधारित फिल्म में वापस लोकप्रिय होने लगी 1990- 2000 के दशक में बनी फिल्म में भारत के बाहर भी काफी लोकप्रिय रही प्रवासी भारतीयों की बढ़ती संख्या भी इसका प्रभाव कारण थी हिंदी फिल्मों में प्रवासी भारतीयों के विषय लोकप्रिय रही!

सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव वहन करने के कारण बड़ी संख्या में 1930 से 1934 के बीच फिल्में प्रतिबंधित हुई जिनमें से कुछ 1937 में कांग्रेस की सरकारों के अस्तित्व में आने के बाद प्रदर्शित हो सकी!

30 और 40 के दशक में 'प्रभात', 'न्यू थियेटर्स' और 'बांबे टॉकीज' जैसी फिल्म कंपनियों की फिल्मों ने सामाजिक चेतना से परिपूर्ण फिल्मों की क्षीण धारा को यदि मुख्यधारा नहीं तो महत्व पूर्ण धारा अवश्य बना दिया सिनेमा की यह धारा विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलनों के उतार-चढ़ाव को अभिलेख बाद ही नहीं कर रही थी बल्कि उन्हें गतिविधि रही थी इस धारा का नेरतर्य हम,

1. नितिन बॉस (1897- 1986)

2. चंद्रलाल साह (1898-1975)

3. महबूब खान (1907-1964)

4. बी०एन रेड्डी (1897-1984)

5. विजय भट्ट (1907-1998)

6. साहे राब मोदी (1897-1987)

7. मास्टर विनायक (1906-1947)

8. गजानन जागीरदार (1907-1988)

9. विमल राय (1909-1966)

10. के अब्बास (1914-1987)

11. चेतन आनंद (1915-1997)

की फिल्मों के रूप में 1947 से पहले और उसके बाद तक की पाते हैं

20वीं सदी के तीसरे दशक की अनेक फिल्मों में जमींदार और किसान सहकार और मजदूरों के संबंधों उनके शोषण का चित्रण हुआ ! किंतु पूरी इमानदारी से विषय को चित्रित करने का साहस बहुत कम लोगों ने किया ! **बॉम्बे टॉकीज** की फिल्म जन्मभूमि 1936 और प्रभात फिल्म कि वह **1937 ब्यांड दा हीरोइन** ' उस जमाने में फिल्मों के प्रायः दो नाम हुआ करते थे , एक भारतीय भाषा में तथा दूसरा अंग्रेजी में मैं दास्तां के विरुद्ध क्रांतिकारी स्वयं को सजीव तक ऐसा चित्रित किया गया था ! जिनमें देश के युवा वर्ग के हृदय की कसमसाहट सुनाई देती है ! इसी दौर की एक फिल्म जाती थी जिसमें देश के अंदर व्याप्त गुलामी और दासता की मानसिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने का अभिप्राय छिपा था !

श्री एम भवनानी ने 1934 में प्रेमचंद की एक कहानी पर दा मिल गया मजदूर नाम की एक फिल्म बनाई है फिल्म मिल मजदूर और मिल मालिक के संबंधों का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में खुलासा करती थी इस फिल्म को देश के कुछ हिस्सों में प्रदर्शित करने पर रोक लगा दी गई थी जबकि इलाहाबाद में यह फिल्म 1935 में प्रदर्शित हुई थी फिल्म को बेहद प्रगतिशील और मजदूर विरोधी दोनों ही माना गया पर निश्चय ही फिल्म विचारोत्तेजक थी तभी तो बलराज साहनी ने जहां इसे उत्कृष्ट फिल्मों की श्रेणी में रखा वहीं ऐप 'अभ्युदय' ने भी इस पर एक से अधिक लेख छापे !

व्ही० शांताराम का नाम राष्ट्रवादी फिल्मकारों में अग्रणी है श्री शांताराम ने हमेशा ज्वलंत सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों को लेकर फिल्में बनाई और भरसक प्रयास किया, कि सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के प्रसार में फिल्में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ! **1937** में बनी उनकी फिल्म दुनिया ना माने बेमेल विवाह की समस्या को बड़ी शिद्दत के साथ उठाती है फिल्म को उन्होंने किसी भी रुमाली हल से दूर रहा रखा **1939** में उन्होंने आदमी जिसमें पहली बार विश्व को एक हार्ड मास की भावना प्रवण महिला के रूप में चित्रित करते हुए वैश्या पुनर्वास की समस्या को गंभीरता से उठाया गया !

1914 में बनी पड़ोसी हिंदू मुस्लिम एकता और सांप्रदायिक सौहार्द के सवाल की जांच पड़ताल करती है और दिखाती है की प्रक्रिया सिटी ही भाई भाई के बीच वैमनस्य पैदा करते हैं उनकी फिल्मों में से '**डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी** '(1943)सर्वाधिक उल्लेखनीय फिल्म है यह फिल्म एक प्रतिबंध कलाकार की कूटनीतिक समझदारी का बेहतरीन नमूना है ब्रिटिश सरकार ने भारतीय फिल्मकारों में युद्ध काल में अपने पक्ष में प्रचार हेतु मदद चाहिए शांताराम ने कांग्रेस द्वारा डॉक्टरों का एक मिशन चीन भेजने की समकालीन घटना को पहली बार सिनेमा का विषय बनाया फिल्म में फासिस्ट जापान के खिलाफ चीनी राष्ट्रवादियों को दिखाया था ! इसलिए ब्रिटिश सरकार ने सहर्ष पास कर दिया !

पं० मोतीलाल नेहरू ने इस मिशन को आयोजित किया था ! अतः कांग्रेस प्रसन्न हुई फिल्म में मांगी लाल सेना को दिलेरी से लड़ते हुए दिखाया था ! इसलिए भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी इसे सराहा ! फिल्म के माध्यम से शांताराम ने यह स्पष्ट कर दिया था , कि जो राष्ट्र दूसरे देशों की राष्ट्रीयता का स्तर पर समर्थन करें वह अपनी अपनी आजादी की लड़ाई के प्रति कितना प्रतिबंध है ! इससे पहले उन्होंने जब महात्मा शीर्षक से महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत एकनाथ के जीवन पर फिल्म बनाई तो ब्रिटिश सरकार ने इसका नाम बदलने के लिए शांताराम को बांधे किया, क्योंकि फिल्म के केंद्रीय पात्र की सारी विधि और कार्यक्रम गांधी जी के गांधी जी से मिलते जुलते प्रतीत होते थे ! फिल्म अततः धर्मात्मा नाम से(1930 -31) प्रदर्शित हुई!

चोरी चोरा कांड के फल स्वरूप असहयोग आंदोलन वापस लेने पर सारे देश में गांधीजी की तीव्र आलोचना हुई उनकी नीतियों से देश के बुद्धिजीवियों का एक वर्ग उनका तीव्र आलोचक बन गया ऐसे बुद्धिजीवी सिनेमा में भी कार्य कार्यरत ए तथा बी० के अत्रे एवं मास्टर विनायक ऐसे ही लोगों में से थे इन दोनों ने अपनी फिल्मों ब्रह्मचारी 1938 ,ब्रांडी की बोटल 1939 ,और धर्मवीर 1930 के माध्यम से गांधीजी की कार्यविधि पर रोक लगा दी!

मुकुल डे - पहली मुलाकात के 10 साल बाद मुकुल डे ने महात्मा गांधी से पुनः मिलने का प्रयास किया और उनके साथ अनेक कार्य करने की इच्छा जाहिर की जब यह सी० एच एंड के साथ महात्मा गांधी के सम्मुख उपस्थित हुए तो वह बहुत अचंचित हुए कि महात्मा गांधी उन को एकदम पहचान गए और उनको साबरमती के आश्रम के विद्यालय के एक कक्ष में पहनने की अनुमति प्रदान की मुकुल डे ने ड्राइफ्ट और पेंसिल से अलग-अलग तस्वीर बनाई !

नंदलाल बोस- नंदलाल बोस का लीनो उत्तकीर्ण 12 अप्रैल 1930 दांडी मार्च के समय की कला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है वास्तव में इस विषय का सबसे पहले उत्तकीर्ण कास्ट पर किया गया जिसमें गांधीजी को 78 अनुयायियों के साथ प्रदर्शित किया गया बाद में इसी विषय का लीनो स्क्रीन पर सफेद और काले रंग द्वारा दिखाया गया यह उन राजनीतिक चित्रों में से एक था ! जिसे नंदलाल बोस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के द्वारा बनाया था !

नंदलाल बोस की अन्य कलाकार ने गांधी दांडी मार्च का चित्रण किया जिनका चित्रकला विद्यालय से कोई संबंध नहीं था ! परंतु विद्यालय से अलग अन्य चित्रकारों ने महात्मा गांधी के प्रति विभिन्न प्रकार के बौद्धिक भावनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति की चित्रकार विनायक ने दांडी मार्च के दौरान गांधीजी की गिरफ्तारी का एक चित्र बनाया शिविर में आधी रात को जब गांधी जी दांडी यात्रा से वापस आ रहे थे तो तो कलाकार ने महात्मा गांधी जी की गिरफ्तारी के बारे में सुना तो इस घटना की तुलना कुछ शास्त्र सुसज्जित मूर्ख सिपाहियों द्वारा आधी रात को ग्रामीण नामक बगीचे से ईसा मसीह की गिरफ्तारी की घटना से की कलाकार ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति अपने चित्र आधी रात की गिरफ्तारी में की !

इस चित्र को कांग्रेस सभा में प्रदर्शित किया गया जब गांधी जी और राजकुमारी अमृता कौर ने तस्वीर देखी तब राजकुमारी ने गांधी जी से पूछा कि यह तस्वीर चित्रकार की कल्पना मात्र है या सत्य तब गांधीजी शांत रहे हैं ! मात्र एक मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया - "हां हां बिल्कुल ठीक ऐसा ही है"!

1930 के गोलमंज सम्मेलन के दौरान महात्मा गांधी लंदन के में ठहरे अमेरिका के प्रसिद्ध मूर्तिकार जॉन डेविल्सन ने उनकी अनेक मूर्तियां बनाई गांधी जी ने उनको देखकर उन्होंने कहा - " कि मैं समझता हूं कि आपने मिट्टी के नायक बनाए हैं, डेविल्सन महात्मा गांधी के साथ 4 या 5 दिन रात रहे डेविल्सन ने लिखा- " गांधी जी का चेहरा तेज से भरा प्रत्येक अंग स्पष्ट जब वे बोलते हैं तो उनके चेहरे पर प्रत्येक भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं"!

